

# डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 13, गुलामी और चर्च, गृहयुद्ध

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 13 है, गुलामी और चर्च, गृहयुद्ध।

हम गुलामी और चर्च हैं। हम अभी भी पृष्ठभूमि में हैं। हमने पृष्ठभूमि को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया है, और फिर जब हम पृष्ठभूमि को समाप्त कर लेंगे, तो हम गुलामी के प्रति चर्चों की प्रतिक्रिया पर आगे बढ़ेंगे। तो, ठीक है, तो आइए हम खुद को याद दिलाएँ कि हम व्याख्यान के इस भाग के संदर्भ में यहाँ क्या कर रहे हैं।

मैं जो करने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि अमेरिकी जीवन और संस्कृति में गुलामी विरोधी भावनाएँ और उन्मूलनवादी भावनाएँ कैसे संस्थागत हो गईं, इसका कालक्रम देना। इसलिए, हमने कालक्रम पर काम किया, और हमने केकर्स से शुरुआत की, और फिर हम 1774 में चले गए। याद है केकर्स के साथ, हमने 1775 कहा था? फिर हम मेथोडिस्ट के साथ 1784 में चले गए, और क्रिसमस सम्मेलन में, मेथोडिस्ट ने फैसला किया, आप जानते हैं, हम ऐसी व्यवस्था करने जा रहे हैं कि कोई भी व्यक्ति जो मेथोडिस्ट होने का दावा करता है, वह गुलाम नहीं रख सकता।

फिर हम 1770 के दशक में आए, और हमने एडवर्ड्स के बारे में बात की, और हमने उल्लेख किया कि भले ही जोनाथन एडवर्ड्स के पास वास्तव में दास थे, एडवर्ड्स इस पर विचार करना शुरू कर रहे हैं। और एडवर्ड्स बहुत शक्तिशाली उपदेशक हैं, अमेरिकी सार्वजनिक जीवन में बौद्धिक जीवन का हिस्सा हैं। इसलिए एडवर्ड्स गुलामी के खिलाफ बोलना शुरू कर रहे थे।

फिर हमने 1817 और उपनिवेशीकरण समाज का जिक्र किया और बताया कि संक्रमणकालीन समाज के रूप में उपनिवेशीकरण समाज कितना महत्वपूर्ण था। मेरा मतलब है, यह अंततः विफल हो गया, लेकिन यह संक्रमणकालीन था। इसने लोगों को समस्या के एक हिस्से के प्रति जागरूक किया।

और साथ ही, आखिरी बात जो हमने बताई, मुझे लगता है, दूसरे दिन हमने उल्लेख किया था, हाँ, ओबरलिन कॉलेज की स्थापना 1835। हम इसे फिर से चार्ल्स ग्रैंडिसन फ़िनी के साथ देखने जा रहे हैं क्योंकि वह धर्मशास्त्र के प्रोफेसर और फिर अध्यक्ष थे, लेकिन ओबरलिन कॉलेज की स्थापना एक उन्मूलनवादी कॉलेज के रूप में की गई थी। यह इसके चार्टर का हिस्सा था, उन्मूलनवाद को पढ़ाने के इसके मिशन का हिस्सा था।

इसकी स्थापना अमेरिका में पहले सह-शिक्षा कॉलेज के रूप में भी की गई थी। हमने दूसरे दिन इसका जिक्र किया था। तो, ओबरलिन का अमेरिकी ईसाई धर्म में इन दो कारणों के साथ-साथ

अन्य कारणों से भी काफ़ी महत्वपूर्ण स्थान है, जिसके बारे में हम फ़िनी में जाने पर और अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

मुझे लगता है कि मैं यहीं रुक गया। मुझे लगता है कि हमें अभी भी इसे खत्म करने की जरूरत है। अब, मैं इसे एक व्यक्ति के साथ खत्म करने जा रहा हूँ, और उसका नाम विलियम लॉयड गैरिसन है।

विलियम लॉयड गैरिसन उन्मूलनवादी कहानी के लिए बहुत महत्वपूर्ण बन जाता है। विलियम लॉयड गैरिसन के बारे में लंबी कहानी संक्षेप में। विलियम लॉयड गैरिसन को न्यू जर्सी में एक प्रिंटर के रूप में प्रशिक्षित किया गया था।

वह एक प्रिंटर का प्रशिक्षु था। ऐसा हुआ कि जिस व्यक्ति के अधीन उसे प्रशिक्षित किया गया था, और वैसे, यह तथ्य कि उसे प्रिंटर के रूप में प्रशिक्षित किया गया था, उसकी कहानी में बाद में महत्वपूर्ण होने वाला है, लेकिन जिस व्यक्ति के अधीन उसे प्रशिक्षित किया गया था वह एक केकर था। वह गुलामी विरोधी उन्मूलनवादी कारण के लिए समर्पित एक केकर था, और इसलिए विलियम लॉयड गैरिसन, प्रिंटर के रूप में प्रशिक्षु होने के दौरान न्यू जर्सी में रहते हुए, अपने मालिक से इस कारण के बारे में सीखा, और वह गुलामी के उन्मूलन का दोषी बन गया।

अब, वह बोस्टन चले गए। तो, बोस्टन एक बार फिर अमेरिकी ईसाई धर्म की कहानी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लेकिन वह बोस्टन चले गए। बोस्टन जाने के बाद, वह उन्मूलनवादी कारण से बहुत प्रभावित हुए।

उन्होंने पब्लिक लिब्रेटर और जर्नल ऑफ़ द टाइम्स नामक एक पत्रिका शुरू की। उन्होंने इसे 1 जनवरी, 1831 को शुरू किया। यह उन्मूलनवादी पत्रिका और अखबार था जो उन्मूलनवादी कारणों का समर्थन करता था।

अखबार में और उनके सार्वजनिक भाषण में और जब हम अपनी पहली फील्ड ट्रिप में अफ्रीकन मीटिंग हाउस में थे, तो उस फील्ड ट्रिप पर जाने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए, लेकिन जब हम अफ्रीकन मीटिंग हाउस में थे, जो वैसे तो देश का सबसे पुराना अफ्रीकन मीटिंग हाउस है, और इसलिए जब हम वहां होंगे, तो हम देखेंगे कि विलियम लॉयड गैरिसन अन्य स्थानों के अलावा वहां भी भाषण देते थे। लेकिन जिस कारण का उन्होंने प्रचार किया वह था गुलामी का तुरंत उन्मूलन, बिना किसी चर्चा के। गुलामों को तुरंत खत्म किया जाना चाहिए, गुलामी को तुरंत खत्म किया जाना चाहिए, गुलामों को तुरंत मुक्त किया जाना चाहिए, और यही उनका उद्देश्य है, यही उनका युद्ध नारा है।

विलियम लॉयड गैरिसन के साथ जो हुआ वह बहुत महत्वपूर्ण था। विलियम लॉयड गैरिसन ने लोगों के बीच विभाजन पैदा किया और या तो लोग उसके पक्ष में थे या उसके खिलाफ थे। विलियम लॉयड गैरिसन के मामले में कोई बीच का रास्ता नहीं था क्योंकि वह अश्वेतों की तत्काल और तत्काल मुक्ति के लिए बहुत दृढ़ था और वह इसके अलावा कुछ भी नहीं सुनना चाहता था।

अब, अन्य लोग भी उन्मूलनवादी थे, लेकिन वे उन्मूलन को एक अलग और अधिक मापा तरीके से आगे बढ़ाना चाहते थे जो उन्हें लगता था कि अधिक प्रभावी होगा। लेकिन कुछ लोग विलियम लॉयड गैरीसन के पक्ष में थे और इस तात्कालिकता के मुद्दे पर बिल्कुल अडिग थे जबकि अन्य लोग इसके पक्ष में नहीं थे। इसलिए, विलियम लॉयड गैरीसन एक ऐसा व्यक्ति था जिसने उन्मूलनवादियों के बीच किसी तरह की विभाजनकारी स्थिति पैदा की।

अब, हालांकि, मैं विलियम लॉयड गैरीसन के बारे में एक सवाल पूछना चाहता हूँ। कभी-कभी, किसी मुद्दे को आगे बढ़ाने के लिए, आपको इस तरह के व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है। कभी-कभी, किसी मुद्दे को वास्तव में आगे बढ़ाने के लिए, आपको विलियम लॉयड गैरीसन जैसे व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है।

इसलिए भले ही उन्होंने विभाजन पैदा किया और उनकी कुछ भाषा वास्तव में नियंत्रित नहीं थी, कभी-कभी उन्होंने चर्च के खिलाफ़ बात की और प्रचारकों के खिलाफ़ बात की और अन्य उन्मूलनवादियों के खिलाफ़ बात की। लेकिन कभी-कभी आपको चीजों को आगे बढ़ाने के लिए उस तरह के व्यक्ति की आवश्यकता होती है, और विलियम लॉयड गैरीसन ऐसे ही व्यक्ति हैं। इसलिए, हम अपनी कालानुक्रमिक कहानी को विलियम लॉयड गैरीसन के साथ समाप्त करते हैं, और अब गुलामी विरोधी कारण, उन्मूलनवादी कारण के लिए लड़ाई जारी है।

ठीक है, अब हम गुलामी के प्रति चर्चों की प्रतिक्रिया पर नज़र डालने जा रहे हैं। हम उन चर्चों पर नज़र डालने जा रहे हैं जो गुलामी के मुद्दे पर विभाजित थे। ठीक है, और हम मेथोडिस्ट, बैपटिस्ट और प्रेस्बिटेरियन पर नज़र डालने जा रहे हैं।

तो, ऐसे चर्च थे जो इस मुद्दे पर विभाजित थे। आइए मेथोडिस्ट से शुरू करते हैं। ठीक है, मेथोडिस्ट के साथ, हम खुद को जॉन वेस्ले की गुलामी विरोधी उन्मूलनवादी भावनाओं की अपनी समझ के बारे में याद दिलाते हैं।

तो, जॉन वेस्ले, हम पहले ही इस बारे में बात कर चुके हैं, लेकिन उन्होंने गुलामी को खलनायकी की सबसे बड़ी खलनायकी कहा। तो, वेस्ले और उनके तत्काल अनुयायी, निश्चित रूप से दृढ़ थे कि मेथोडिस्ट कभी भी गुलाम नहीं रखेंगे। और याद रखें, हमने पहले ही 1784 की तारीख दी है; यह एक ऐसी तारीख है जिसे आप अपने जीवनकाल में फिर से देख सकते हैं, इसलिए तारीख 1784 है।

याद कीजिए, 1784 के क्रिसमस सम्मेलन में यह घोषित किया गया था कि मेथोडिस्ट लोग गुलाम नहीं रख सकते। तो यह मेथोडिस्ट की कहानी है, और लोग मेथोडिस्ट कहानी का पालन कर रहे थे, इसलिए हमने सोचा, अच्छा, क्या हुआ कि कुछ मेथोडिस्ट गुलाम रखने लगे, और मेथोडिज्म के भीतर धीरे-धीरे एक तरह की कमी आ गई।

कुछ मेथोडिस्टों ने दास रखना शुरू कर दिया, और अन्य मेथोडिस्ट इससे नाखुश थे। इसलिए, हमने नामों की इस सूची में सबसे नीचे एक नाम दिया है। एक व्यक्ति जो नाखुश था, उसका नाम अविस्मरणीय है; उसका नाम ऑरेंज स्कॉट था।

अब, कौन अपने बच्चे का नाम ऑरेंज रखेगा? मुझे यह कभी समझ नहीं आया। मैंने इस पर शोध करने की कोशिश की है। शायद यह एक पारिवारिक नाम था; मैं सिर्फ इतना ही समझ पाया हूँ क्योंकि आप अपने बच्चे का नाम ऑरेंज रखेंगे।

मेरा मतलब है, ऐसा कौन करेगा? यह केला, सेब, कीनू या कुछ और हो सकता है, लेकिन उसका नाम अविस्मरणीय है। यह ऑरेंज स्कॉट है। ऑरेंज स्कॉट इस बात से इतना नाराज था कि मेथोडिस्ट गुलाम रखने लगे थे कि उसने 1843 में अपना खुद का संप्रदाय शुरू कर दिया।

तो, यह मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च से एक विराम है और उन्होंने चर्च को वेस्लेयन मेथोडिस्ट चर्च कहा, जो आज भी अस्तित्व में है। आप में से कुछ लोग वेस्लेयन मेथोडिस्ट चर्च की पृष्ठभूमि से हो सकते हैं। मुझे नहीं पता, लेकिन उन्होंने अपने चर्च को वेस्लेयन मेथोडिस्ट चर्च कहा। लेकिन, वेस्लेयन मेथोडिस्ट चर्च की सदस्यता के साथ, आप दास नहीं रख सकते थे।

यह निषिद्ध था। इसलिए, वह इस बात से इतना नाराज था कि मेथोडिज्म मेथोडिस्टों को दास रखने की अनुमति दे रहा था कि वह मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च से बाहर निकल गया और चीजों को आगे बढ़ाना शुरू कर दिया। इसलिए यहीं से मेथोडिस्ट और वेस्लेयन मेथोडिस्ट चर्च के बीच विभाजन शुरू हो गया।

अब, 1844 1843 बन गया है, इसलिए आपको पहले से ही एक और संप्रदाय मिल गया है। आपको वेस्लेयन मेथोडिस्ट चर्च मिल गया है। अब हम मेथोडिस्टों के बीच 1844 में आते हैं।

1844 एक महत्वपूर्ण तारीख थी, और मुद्दा यह था कि मेथोडिस्ट चर्च के बिशपों में से एक गुलाम मालिक था, और मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च में अभी भी मेथोडिस्ट लोग थे जो गुलामी के उन्मूलनवादी और विरोधी थे। अब आपके पास एक बिशप है, आपके पास चर्च का एक नेता है जो गुलामों को रखता है। और इसलिए एक सम्मेलन में एक साथ आकर इस बारे में बहुत बहस और बहुत तर्क-वितर्क हुआ।

क्या इसकी अनुमति दी जानी चाहिए? और जो हुआ वह यह था कि दास रखने के मुद्दे पर, मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च दो हिस्सों में विभाजित हो गया, और उत्तरी चर्च मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च बना रहा, और उत्तरी चर्च की सदस्यता का मतलब था कि आप दास नहीं रख सकते थे। दक्षिणी चर्च को मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च साउथ के नाम से जाना जाने लगा। और मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च, वास्तव में वहाँ एक अल्पविराम है, मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च अल्पविराम साउथ, और मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च अल्पविराम साउथ की सदस्यता का मतलब था कि आप मेथोडिस्ट हो सकते हैं और आप दास रख सकते हैं।

तो, मेथोडिज्म के साथ जो हुआ वह यह है कि यह भौगोलिक रूप से विभाजित हो गया। और इसलिए, आप मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च और मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च साउथ के साथ समाप्त होते हैं। यदि आप दक्षिण में बहुत यात्रा करते हैं और यदि आप मेथोडिस्ट चर्च के सामने आते हैं, तो यह इस बात पर निर्भर करता है कि यह कब बनाया गया था, लेकिन यदि आप दक्षिण में बहुत यात्रा करते हैं और आप ध्यान से देखते हैं, तो आपको बहुत सारे चर्च दिखाई देंगे जो

1850, 60, 70 के दशक में बनाए गए थे, और यह मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च कहेगा, शायद आधारशिला पर या शायद द्वार के ऊपर, लेकिन यह मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च कोमा साउथ कहेगा।

इसलिए अगर आप देखें, तो आपको किसी दक्षिणी शहर में मेथोडिस्ट चर्च दिखाई देगा, और आप पाएंगे कि जब वह चर्च बनाया गया था, तब उनके लिए इसका इस्तेमाल किया गया था। ठीक है, तो मेथोडिस्ट निश्चित रूप से गुलामी के मुद्दे पर किसी भी संप्रदाय की तरह विभाजित थे, इसमें कोई संदेह नहीं है। बैपटिस्ट भी गुलामी के मुद्दे पर विभाजित थे।

ठीक है, बैपटिस्ट के बीच का मुद्दा, अब याद रखें कि बैपटिस्ट यहाँ बहुत से अलग-अलग संप्रदाय हैं, लेकिन हम यहाँ मुख्य रूप से उत्तर और दक्षिण में मुख्य बैपटिस्ट संप्रदाय के बारे में बात कर रहे हैं, इसलिए और हम जानते हैं कि बैपटिस्ट के बीच बहुत से अन्य संप्रदाय उभरे हैं और इसी तरह, लेकिन हम यहाँ आम तौर पर बुनियादी बैपटिस्ट के बारे में बात कर रहे हैं। ठीक है, वे 1844 में एक सम्मेलन के लिए एक साथ आए थे, मेथोडिस्ट के समान ही तारीख पर ध्यान दें, 1844। बैपटिस्ट सम्मेलन में एक साथ आते हैं।

अब, जो हुआ वह यह था कि एक राज्य था, और आम तौर पर, बैपटिस्ट राज्य सम्मेलनों द्वारा संगठित होते हैं, इसलिए अलबामा में एक राज्य सम्मेलन था। इसलिए, बैपटिस्ट अलबामा राज्य में एक साथ आए। जो हुआ वह यह था कि उस सम्मेलन में, ऐसे लोग थे जो मानते थे कि बैपटिस्ट मिशनरियों को अभी भी गुलाम रखने में सक्षम होना चाहिए।

इसलिए भले ही उन्हें मिशनरी के रूप में नियुक्त किया गया था, अगर वे गुलाम मालिक थे, तो उन्हें अभी भी अपने गुलामों को रखने में सक्षम होना चाहिए, लेकिन अन्य बैपटिस्ट इससे असहमत थे। तो फिर, यह मुद्दा था; यह मुद्दा था, यह मुद्दा था कि क्या चर्च के एक सदस्य, जो इस मामले में चर्च का एक महत्वपूर्ण सदस्य है, मिशनरियों को गुलाम रखने चाहिए? ठीक है, मूल रूप से, बैपटिस्ट के साथ क्या होता है कि वे उत्तर और दक्षिण को भी तोड़ देते हैं। तो, 1845 में एक संप्रदाय का गठन किया गया था जिससे आप परिचित होंगे, और यह था, और यह था, और उन्होंने खुद को दक्षिणी बैपटिस्ट सम्मेलन, दक्षिणी बैपटिस्ट सम्मेलन कहा।

इसलिए, वे 1845 में गठित हुए, और वे इस सिद्धांत पर गठित हुए कि बैपटिस्टों के लिए दास रखना ठीक है। अब, बहुत पहले नहीं, मैं कहने जा रहा हूँ, मुझे यह सुनिश्चित करने के लिए जाँच करनी होगी, लेकिन मैं कह रहा हूँ कि चार या पाँच, छह साल पहले, दक्षिणी बैपटिस्ट सम्मेलन ने पूछना शुरू किया, यह अमेरिका में सबसे बड़ा प्रोटेस्टेंट संप्रदाय है, दक्षिणी बैपटिस्ट सम्मेलन ने खुद से पूछना शुरू किया, क्या हमें नाम बदलना चाहिए? शायद नाम बदलने का समय आ गया है क्योंकि उत्तर में बहुत सारे दक्षिणी बैपटिस्ट हैं, और मिशन क्षेत्र में बहुत सारे दक्षिणी बैपटिस्ट हैं, तो क्या दक्षिणी बैपटिस्ट सम्मेलन शब्द का अब कोई मतलब है? कुछ लोगों को लगा कि नाम बदल दिया जाना चाहिए क्योंकि यह दासता की भी अनुमति देता है। अब, वे नाम नहीं बदलने के लिए सहमत हुए, इसलिए वे अभी भी दक्षिणी बैपटिस्ट सम्मेलन नाम से चलते हैं, लेकिन, शुरू में, वे एक थे, दक्षिणी बैपटिस्ट सम्मेलन ने दास मालिकों को दक्षिणी बैपटिस्ट सम्मेलन का हिस्सा बनने की अनुमति दी, इसलिए।

तो, बैपटिस्ट अलग हो गए। ठीक है, और तीसरे नंबर पर प्रेस्बिटेरियन हैं। प्रेस्बिटेरियन भी गुलामी के मुद्दे पर अलग हो गए।

मैं बस इतना बताना चाहता हूँ कि वे थोड़े समय बाद ही विभाजित हुए; वे गृहयुद्ध के अंत तक बीच में ही विभाजित हो गए। उत्तरी प्रेस्बिटेरियन, और आप में से कुछ लोग प्रेस्बिटेरियन हो सकते हैं, इसलिए आप इन नामों से परिचित हो सकते हैं, लेकिन उत्तरी प्रेस्बिटेरियन ने संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रेस्बिटेरियन चर्च के शब्द, प्रकार और संप्रदाय का शीर्षक अपनाया, संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रेस्बिटेरियन चर्च। दक्षिणी प्रेस्बिटेरियन चर्च ने संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रेस्बिटेरियन चर्च शब्द अपनाया।

और अब, युद्ध के अंत के करीब प्रेस्बिटेरियन विभाजित हो गए, 64. विभाजन में कुछ समय लगा, लेकिन वे मूल रूप से उत्तर और दक्षिण में विभाजित हो गए। तो आपको उत्तरी प्रेस्बिटेरियन और दक्षिणी प्रेस्बिटेरियन मिले। दक्षिणी प्रेस्बिटेरियन दास रखते थे; उत्तरी प्रेस्बिटेरियन दास रखने पर रोक लगाते थे।

उत्तरी और दक्षिणी प्रेस्बिटेरियन प्रेस्बिटेरियन चर्च थे। क्या मैंने इसे सही समझा? दक्षिणी, उत्तरी, संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रेस्बिटेरियन चर्च था, और दक्षिणी, दक्षिणी, संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रेस्बिटेरियन चर्च था। अब, तब से प्रेस्बिटेरियनवाद में बहुत सारे बदलाव हुए हैं। यदि आप में से कोई भी प्रेस्बिटेरियन है, तो आपको पता होगा कि तब से विलय और अन्य कई बदलाव हुए हैं, लेकिन इस विभाजन ने दासता को जन्म दिया।

ठीक है, ये गुलामी के प्रति प्रतिक्रियाएँ हैं, वे चर्च जो विभाजित हुए। ठीक है, नंबर सी गुलामी के प्रति प्रतिक्रियाएँ हैं, वे चर्च जो विभाजित नहीं हुए। गुलामी के मुद्दे पर कौन से चर्च विभाजित नहीं हुए, और वे क्यों विभाजित नहीं हुए? क्यों, आप जानते हैं, प्रेस्बिटेरियन, बैपटिस्ट और प्रेस्बिटेरियन क्यों विभाजित हुए जबकि ये अन्य समूह विभाजित नहीं हुए? ठीक है, हमारे पास आपकी रूपरेखा पर चार हैं।

ठीक है, सबसे पहले, कांग्रेसनलिस्ट। कांग्रेसनलिस्टों के बीच गुलामी के मुद्दे पर कोई मतभेद नहीं था। अब, ऐसा क्यों था? यह काफी हद तक उनके स्थान के कारण था।

कांग्रेसनलिस्ट्स लगभग पूरी तरह से उत्तरी और मुख्य रूप से न्यू इंग्लैंड के थे। इसलिए, उत्तर में रहने वाले और बोस्टन जैसी जगहों पर गुलामी विरोधी आंदोलन का हिस्सा बनने वाले लोग कांग्रेसनलिस्ट्स द्वारा चलाए जा रहे थे। इसलिए, कांग्रेसनलिस्ट्स को विभाजन की कोई आवश्यकता महसूस नहीं हुई।

उन्मूलनवाद और गुलामी विरोधी भावनाओं के बारे में भावना की एकता थी, और वे सभी उत्तर में थे। इसलिए, उस कारण से कोई विभाजन नहीं था। ठीक है, अब लूथरन।

आपमें से कुछ लोग लूथरन पृष्ठभूमि से हो सकते हैं। लूथरन इस बात को कैसे स्वीकार करते हैं? खैर, यह समझने के लिए कि वे इस बात को कैसे स्वीकार करते हैं, हमें लूथरन धर्मशास्त्र को थोड़ा समझना होगा। मार्टिन लूथर ने सिखाया कि मनुष्य दो सरकारों के अधीन रहते हैं।

चर्च की सरकार है जो हमारे आध्यात्मिक जीवन को नियंत्रित करती है, और राज्य की सरकार है जो हमारे नागरिक जीवन, हमारे राजनीतिक जीवन, हमारे सामाजिक जीवन को नियंत्रित करती है। ठीक है, अब हर ईसाई की दोनों सरकारों के प्रति निष्ठा है। आपको चर्च की सरकार के प्रति निष्ठा है क्योंकि चर्च आपके आध्यात्मिक जीवन से संबंधित है।

आप राज्य सरकार के प्रति निष्ठा रखते हैं क्योंकि राज्य आपके नागरिक जीवन, आपके सामाजिक जीवन और आपके सांस्कृतिक जीवन को नियंत्रित करता है। ठीक है, लेकिन एक दूसरे के साथ उलझता नहीं है। इसलिए, लूथरन, सिर्फ अपनी धार्मिक दृष्टि के आधार पर, सिर्फ अपनी धार्मिक संरचना के आधार पर, लूथरन चर्च ने गुलामी के मुद्दे में शामिल न होने का फैसला किया है।

यह एक राजनीतिक मुद्दा है। यह राजनेताओं का मुद्दा है। यह राज्य को तय करना है।

इसलिए, हम इसे अपने तरीके से चलने देंगे। इसलिए, लूथरन मूल रूप से, जिस तरह से वे सामने आए, वह मूल रूप से यह था कि प्रत्येक क्षेत्रीय लूथरन समूह ने अपना निर्णय लिया। यदि आप उत्तर में थे और आपने उन्मूलन का फैसला किया, तो यह ठीक है।

गुलाम रखने वालों को अपने समुदाय का सदस्य न बनने देना ठीक है। अगर आप दक्षिण में लूथरन चर्च हैं और आप गुलाम रखना चाहते हैं और लूथरन चर्च गुलाम रखने वालों को अनुमति देता है, तो यह भी ठीक है। लेकिन गुलामी और गुलामी का उन्मूलन और गुलामी-विरोधी, यह एक राजनीतिक मामला है।

हमें राजनीतिक जीवन को अंततः इसका ध्यान रखने देना होगा। तो, लूथरनवाद का मूल रूप से मतलब था कि यदि आप लूथरन हैं तो आप अपने निर्णय स्वयं लें। ठीक है, तीसरे नंबर पर एपिस्कोपेलियन हैं।

याद रखें, यह क्रांति के बाद का एपिस्कोपेलियन चर्च है। यह क्रांतिकारी युद्ध के बाद का एंग्लिकन चर्च नहीं है। यह एपिस्कोपल चर्च है।

अब, एपिस्कोपेलियन ने लूथरन के समान ही काम किया। उनके पास एक जैसा धर्मशास्त्र नहीं था, लेकिन उन्होंने लूथरन के समान ही काम किया। एपिस्कोपेलियन अपने स्थान के संदर्भ में लगभग पूरे नक्शे पर मौजूद थे।

इसलिए, एपिस्कोपेलियन ने विभिन्न स्थानों पर लोगों को अपने निर्णय लेने की अनुमति दी, लेकिन इसके लिए एपिस्कोपल चर्च में कोई विभाजन नहीं था। इसलिए, जहाँ तक एपिस्कोपल चर्च का सवाल है, यह यथास्थिति थी। और यदि आप उत्तरी हैं और आप ऐसा होना चाहते हैं, तो आप जानते हैं, यदि आपका चर्च दास न रखने का निर्णय लेता है, तो यह ठीक है।

यदि आप दक्षिणी हैं, तो आपका चर्च दास रखने का फैसला करता है, यह भी ठीक है। अब, एक और छोटा सा मुद्दा है जो इस पर काम कर रहा है जिसके बारे में हम अमेरिकी ईसाई धर्म में ज्यादा बात नहीं करते हैं, लेकिन इस दौरान इसका थोड़ा बहुत प्रभाव पड़ा। और इस मुद्दे को ऑक्सफोर्ड मूवमेंट कहा जाता था।

इंग्लैंड में एक आंदोलन था जिसे ऑक्सफोर्ड आंदोलन कहा जाता था। ठीक है, ऑक्सफोर्ड आंदोलन के बारे में संक्षेप में कहानी। इंग्लैंड में ऑक्सफोर्ड आंदोलन एक एंग्लिकन आंदोलन था जो यह देखना चाहता था कि वे रोमन कैथोलिक चर्च के कितने करीब हैं।

दूसरे कोर्स में, मुझे ऑक्सफोर्ड मूवमेंट पर लंबे समय तक व्याख्यान देना है, लेकिन हमारे उद्देश्यों के लिए, लंबी कहानी को संक्षेप में कहें तो, 1840, 50, 60 और इसी तरह के कई दशकों में कई एंग्लिकन रोमन कैथोलिक बन गए। बहुत सारे एंग्लिकन रोमन कैथोलिक बन गए और उदाहरण के लिए जॉन हेनरी न्यूमैन जैसे बहुत प्रसिद्ध रोमन कैथोलिक, क्योंकि उन्हें लगा कि एपिस्कोपल चर्च और रोमन कैथोलिक चर्च के बीच कोई अंतर नहीं है। इसलिए, उनके लिए रोमन कैथोलिक चर्च में संक्रमण करना आसान था।

इसे ऑक्सफोर्ड मूवमेंट कहा गया क्योंकि सभी सोच, उपदेश और लेखन ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में शुरू हुए थे। इसलिए, इसे हम रोमन कैथोलिक धर्म में एक उच्च चर्च आंदोलन कहते हैं। अब, यह अमेरिकी एपिस्कोपेलियन को भी थोड़ा प्रभावित करता है, क्योंकि उनमें से कुछ ऑक्सफोर्ड आंदोलन से जुड़े थे।

और क्या हम रोमन कैथोलिकों की तरह हैं? क्या हम रोमन कैथोलिकों की तरह नहीं हैं? क्या हमें रोमन कैथोलिक बन जाना चाहिए? एक तरह से, ऑक्सफोर्ड मूवमेंट के विचारों ने उनकी नज़र उन्मूलन और गुलामी-विरोधी और इसी तरह की चीज़ों से हटा दी। तो, ऑक्सफोर्ड मूवमेंट का अमेरिकी एपिस्कोपेलियन पर थोड़ा प्रभाव पड़ रहा है। ऑक्सफोर्ड मूवमेंट के उस प्रभाव के उदाहरण के तौर पर, क्या आप में से कोई बोस्टन में चर्च ऑफ़ द एडवेंट गया है? कोई? बोस्टन में चर्च ऑफ़ द एडवेंट? अगर आपको मौका मिले, तो आपको चर्च ऑफ़ द एडवेंट जाना चाहिए।

यह एक एंग्लो-कैथोलिक चर्च है। अब, यह रोमन कैथोलिक नहीं है। यह अभी भी एंग्लिकन एपिस्कोपेलियन है, लेकिन यह एंग्लो-कैथोलिक है।

और इसलिए, आपको लगता है कि आप रोमन कैथोलिक चर्च में हैं। उनके पास एक उच्च मास है। आप मास में जा रहे हैं।

चर्च में बहुत सारी धार्मिक क्रियाएँ शामिल हैं। मेरे दोस्त इसे गंध और घंटियाँ कहते हैं। चर्च की सेवा में बहुत सारी गंध और घंटियाँ होती हैं।

तो, आप जानते हैं, हर चीज़ के लिए बहुत सारी धूपबत्ती। और इसलिए, यह देखना दिलचस्प है, हालाँकि, क्योंकि यह रोमन कैथोलिक नहीं है, लेकिन यह एंग्लो-कैथोलिक है। इसलिए, इसने किसी तरह की सीमा पार नहीं की है।



लेकिन मेरी प्रार्थना, मेरा मतलब है, आप प्रोटेस्टेंट चर्च में इसकी उम्मीद नहीं करते हैं। इसलिए, यह जाने के लिए एक आकर्षक चर्च है। कभी-कभी, मैंने तुलनात्मक ईसाई धर्म और कैथोलिक-प्रोटेस्टेंट रूढ़िवादी में एक कोर्स पढ़ाया।

तो, हम एडवेंट चर्च गए हैं, जो एक वास्तविक अनुभव है। और ऑर्थोडॉक्स चर्च, हम न्यूबरीपोर्ट गए हैं, न्यूबरीपोर्ट में ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च में। तो, आपको यह करना चाहिए।

वैसे भी, एपिस्कोपेलियन के बीच। इसलिए, वे विभाजित नहीं हुए, और एपिस्कोपेलियन अपनी इच्छानुसार बहुत कुछ कर सकते थे, जो उनके स्थान और चर्च के निर्णय पर निर्भर करता था। और कुछ एपिस्कोपेलियन ऑक्सफोर्ड आंदोलन में इतने शामिल थे कि इसने उनका ध्यान अपनी ओर खींचा।

उनका ध्यान गुलामी के मुद्दे से इतर कहीं और था। ठीक है। ठीक है, रोमन कैथोलिक चर्च।

चौथे नंबर पर रोमन कैथोलिक चर्च है। ठीक है, वहाँ, पोप जो, आप जानते हैं, इस समय पोप थे जब चीजें गर्म हो रही थीं, और गुलामी का मुद्दा गर्म हो रहा था, ग्रेगरी XVI नाम के पोप थे। अब, ग्रेगरी XVI ने जो किया, जो मुझे लगता है कि अच्छा है, वह यह था कि उन्होंने गुलामी विरोधी रोमन कैथोलिक स्थिति को दोहराया।

इसलिए, पोप के रूप में, उन्होंने दासता-विरोधी रोमन कैथोलिक रुख अपनाया, और आप जानते हैं, उन्होंने दुनिया भर के रोमन कैथोलिक चर्च को दास व्यापार की निंदा करने के लिए प्रोत्साहित किया। तो, यह एक तरह की आधिकारिक कहानी है। ठीक है, लेकिन सवाल यह है कि अमेरिका में रोमन कैथोलिक इसे कैसे संभालेंगे? गृहयुद्ध के दौरान सबसे प्रमुख बिशप और नेता, गृहयुद्ध के आधे से भी कम समय में, फ्रांसिस केनरिक थे।

तो, फ्रांसिस केनरिक, और वह, बेशक, बाल्टीमोर में आर्कबिशप थे। फ्रांसिस केनरिक जानते थे कि उन्हें रोमन कैथोलिक चर्च को एक साथ रखने की कोशिश करनी थी, और वह यहाँ लगभग दक्षिणी राज्य में रह रहे थे। इसलिए, बाल्टीमोर के आर्कबिशप के रूप में फ्रांसिस केनरिक एक बहुत ही प्रभावशाली व्यक्ति थे, जिन्होंने मूल रूप से यथास्थिति को वैसे ही रहने दिया जैसा वह था।

अगर रोमन कैथोलिक हैं जो दास प्रथा के उन्मूलनवादी हैं, तो यह ठीक है। अगर रोमन कैथोलिक हैं जो दास रखते हैं, तो ऐसा ही हो। तो, मूल रूप से, रोमन कैथोलिक चर्च दासता के मुद्दे पर विभाजित था।

अब, क्योंकि रोमन कैथोलिक इतने, अब, अमेरिका में रोमन कैथोलिकों के बीच इस तरह की विभाजित राय है। क्योंकि रोमन कैथोलिक सामाजिक प्रक्रिया की बाइबिल, धार्मिक समझ के बारे में बहुत सावधान हैं और उनकी इतनी लंबी परंपरा है, ऐसे रोमन कैथोलिक थे जो वास्तव में महसूस करते थे कि समय बीतने के साथ, कानून की एक उचित प्रक्रिया होने जा रही है जो

अंततः गुलामी को खत्म करने जा रही है। इसलिए, दूसरे शब्दों में, अगर हम अभी इस उथल-पुथल के बीच में हैं तो चिंता न करें।

चीजों को सुलझाया जाएगा। तो, ठीक है। तो, जो हुआ वह यह था कि युद्ध समाप्त होने के बाद, रोमन कैथोलिकों के बीच उत्तर और दक्षिण के बीच सुलह हो गई।

उन्होंने एक दूसरे के साथ समझौता कर लिया, और वे एक एकीकृत रोमन कैथोलिक चर्च चाहते थे। वे चाहते थे, वे द्वेष नहीं रखना चाहते थे, और इसी तरह की अन्य बातें। इसलिए, युद्ध के बाद, रोमन कैथोलिक चर्च वास्तव में बहुत अच्छी तरह से एकजुट हो गया।

तो, जो चर्च विभाजित नहीं हुए वे थे कांग्रेसनलिस्ट, लूथरन, एपिस्कोपेलियन और रोमन कैथोलिक। तो, ठीक है। अब, मैं बस एक मिनट के लिए यहीं रुकता हूँ।

यह व्याख्यान संख्या नौ है। चर्चों में गुलामी। गुलामी और चर्चों के बारे में कुछ भी।

लोग, संप्रदाय और खुद घटनाएँ। हम देखेंगे, हम अपनी पहली फील्ड ट्रिप में इसे फिर से जीने जा रहे हैं क्योंकि हम अफ्रीकी-अमेरिकी ऐतिहासिक क्षेत्र में जाने वाले हैं। हम अफ्रीकी-अमेरिकी ट्रेल पर जाने वाले हैं।

हम उन्मूलनवादियों को देखने जा रहे हैं, और हम भूमिगत को देखने जा रहे हैं। हम भूमिगत रेलमार्ग के घरों और चर्चों को देखने जा रहे हैं जो भूमिगत रेलमार्ग का हिस्सा थे। इसलिए, हम पहली फील्ड ट्रिप में यह सब देखने जा रहे हैं।

चर्चों ने धार्मिक रूप से दासों को अनुमति देने का चुनाव क्यों किया? सही है। इसका मूल कारण यह था कि उन्होंने नया नियम खोला, और उन्हें नए नियम में दासता का पूर्ण उन्मूलन नहीं मिला। हम, वे पॉल को पाते हैं, वे पाते हैं, यह सिर्फ, यह सिर्फ मान्यता है कि पॉल कहते हैं, स्वामियों से बात करते हैं कि उन्हें दासों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।

तो, दासों को अपने स्वामियों की आज्ञा कैसे माननी चाहिए, इत्यादि। इसलिए, उन्हें नए नियम में कोई स्पष्ट उन्मूलन नहीं मिलता। जबकि लोगों ने, जबकि उन्मूलनवादियों ने कहा, यदि आप पॉल को ध्यान से पढ़ेंगे, तो आप देखेंगे कि वह, कि यह उसका अंतिम है, यह पॉल के लिए अंतिम है।

और इसलिए, बाइबल की उनकी व्याख्या में अंतर है। ठीक है। ठीक है।

यह एक अच्छी बात है, और हम इसे तब देखेंगे जब हम वास्तव में अमेरिका में काले चर्च के बारे में बात करेंगे। लेकिन ऐसे चर्च भी थे जो उन्मूलनवादी थे। हम चार्ल्स स्ट्रीट चर्च को देखने जा रहे हैं।

यह एक उन्मूलनवादी चर्च था, लेकिन अश्वेतों को बालकनी में बैठना पड़ता था। इसलिए, वहाँ अश्वेत मुख्य मंजिल पर नहीं बैठ सकते थे, और अश्वेत चर्च में एक सीट नहीं खरीद सकते थे, और

इसी तरह। तो, यहाँ एक चर्च है जो एक उन्मूलनवादी चर्च है, एक गुलामी विरोधी चर्च है, लेकिन अश्वेतों के साथ दूसरे दर्जे के नागरिकों जैसा व्यवहार किया जाता है।

तो, अश्वेतों के एक समूह ने उस चर्च को छोड़ दिया, और उन्होंने अपना खुद का चर्च बनाया। और, लेकिन उन्होंने इसे एक अश्वेत चर्च के रूप में नहीं बनाया। उन्होंने इसे एक एकीकृत चर्च के रूप में बनाया।

अमेरिका में पहला एकीकृत चर्च, और इसे ट्रेमोंट टेम्पल बैपटिस्ट चर्च कहा जाता है। तो, ट्रेमोंट टेम्पल बैपटिस्ट चर्च, जिससे आप हर दिन गुजरते हैं, अगर आप वैसे भी फ्रीडम ट्रेल पर चलते हैं, और हम फ्रीडम, ट्रेमोंट टेम्पल बैपटिस्ट चर्च से चलेंगे, लेकिन अमेरिका में पहला एकीकृत चर्च। इसलिए, सिर्फ इसलिए कि एक चर्च उन्मूलनवादी था, इसका मतलब यह नहीं था कि वह अभी भी पूर्ण समानता रखता था।

तो, यह भी समय बीतने के साथ ही आना चाहिए। चर्चों में गुलामी के बारे में कुछ और। यहाँ, कुछ भी? नहीं, आपका दिल आशीर्वादित है, हम ठीक चल रहे हैं।

ठीक है, शायद मैं आपको थोड़ा ब्रेक दूँ, बुधवार को यहाँ सिर्फ पाँच सेकंड का ब्रेक, और फिर, और चर्च। और मैं सबसे पहले धार्मिक निष्ठा के बारे में बात करने जा रहा हूँ, और फिर, हम युद्ध की व्याख्याओं के बारे में बात करने जा रहे हैं। तो, धार्मिक निष्ठा।

तो, ठीक है, धार्मिक निष्ठा के बारे में क्या? ओह, मुझे अपना अगला सवाल पूछने दो, मैं यहीं तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हारे साथ हूँ। ठीक है, चर्च में गृहयुद्ध, ठीक है।

ठीक है, यहाँ धार्मिक निष्ठा के बारे में क्या? आम तौर पर, धार्मिक निष्ठा भूगोल पर निर्भर थी। इसलिए, जब आप, जब, जब गृह युद्ध गर्म होने लगता है, गृह युद्ध, याद रखें, 1861 से 1865 तक है। इसलिए, जब गृह युद्ध गर्म होने लगा, तो उत्तर में मंत्रियों ने युवा पुरुषों को गुलामों की स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

दक्षिण में आपको ऐसे मंत्री मिलेंगे जो युवा पुरुषों को वास्तव में एक राजनीतिक एजेंडे की रक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, न कि केवल दास रखने की अनुमति के एजेंडे के लिए। लेकिन, आपको मंत्री मिलेंगे, लोग, यह, किकी ने सवाल पूछा, लेकिन जो लोग सुसमाचार खोलते हैं, सुसमाचार पढ़ते हैं, बाइबिल पढ़ते हैं, और आपको उत्तर और दक्षिण दोनों में मंत्री मिलेंगे जो मानते हैं कि उनके पास सुसमाचार के लिए बाइबिल का औचित्य है जिसका वे मंच से प्रचार कर रहे हैं, या तो दासता विरोधी होने के लिए या दास रखने के लिए। इसमें कोई संदेह नहीं है।

तो, यहाँ यह बहुत पेचीदा हो जाता है। तो, ठीक है, अब, धार्मिक निष्ठा के संदर्भ में, दोनों पक्ष, उत्तर और दक्षिण, दोनों पक्ष जीत के लिए प्रार्थना करते हैं और जीत के बारे में गाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है।

तो, यहाँ उस समय दक्षिण से एक प्रार्थना है। मैं प्रार्थना की केवल पहली दो पंक्तियों का उल्लेख करूँगा। तो, यहाँ दक्षिण से एक प्रार्थना है।

उनकी सेना को नीचे गिरा दो, क्रूर शत्रु को पीछे हटा दो, और घमंडी विनाशक को यह बता दो कि ईश्वर हमारे पक्ष में है। तो, यह दक्षिण से एक प्रार्थना है। तो, दक्षिण से एक बहुत मजबूत प्रार्थना, आप जानते हैं।

तो, वे कौन हैं जो खेल बिगाड़ने वाले हैं? वे उत्तरी सैनिक हैं। इसलिए, तुम उनकी सेना को पीछे धकेल दो, क्रूर शत्रु को पीछे हटा दो, और घमंडी खेल बिगाड़ने वालों को यह बता दो कि ईश्वर हमारे पक्ष में है। लेकिन उत्तर में ऐसे लोग भी हैं जो इसके विपरीत प्रार्थना कर रहे थे और गा रहे थे, और सबसे प्रसिद्ध, निश्चित रूप से, जूलिया वार्ड होवे हैं, और उन्होंने एक गीत लिखा है।

मुझे नहीं पता कि इसका क्या मतलब है, लेकिन यह रिपब्लिक का बैटल हाइमन है। तो, आप जूलिया वार्ड होवे, बैटल हाइमन, रिपब्लिक के बैटल हाइमन से परिचित होंगे। मूल रूप से, रिपब्लिक का बैटल हाइमन, निश्चित रूप से, भगवान द्वारा उत्तरी कारण लेने के बारे में एक गीत था।

मैं मानता हूँ, हाँ, बैटल हाइमन ऑफ़ द रिपब्लिक, लेकिन बैटल हाइमन ऑफ़ द रिपब्लिक को गाना मुश्किल है। मुझे नहीं पता कि इसका क्या मतलब है। एक छंद कहता है, बस इसे सुनो। यह रोमांटिकतावाद का पागलपन है।

यह कहता है, सुंदरता में आप इस श्लोक को जानते हैं, है न? मसीह समुद्र के पार अपनी छाती में महिमा के साथ पैदा हुआ था; मुझे नहीं पता कि इसका क्या मतलब है, जो आपको और मुझे बदल देता है। जैसे वह मनुष्यों को पवित्र बनाने के लिए मरा, वैसे ही हमें मनुष्यों को स्वतंत्र बनाने के लिए मरना चाहिए। हमारा परमेश्वर, हमारा परमेश्वर आगे बढ़ रहा है।

तो यही है, बेटा, जब तुम समझ जाओ कि इसका क्या मतलब है, तो मुझे बताना। लिली की सुंदरता, मसीह का जन्म, उसकी छाती में महिमा, तुम और मुझे रूपांतरित करती है, और इसी तरह। तो, मुझे नहीं पता कि इसका क्या मतलब है।

लेकिन वैसे भी, दोनों पक्षों ने जीत के लिए प्रार्थना की थी, इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं है। अब, युद्ध के बाद, उत्तर और दक्षिण के बीच सुलह का एक बहुत ही कठिन समय था, युद्ध के बाद। इसलिए, युद्ध के बाद, यह उत्तर और दक्षिण के बीच सुलह का एक कठिन समय था।

और उत्तर और दक्षिण के बीच मुश्किल समय क्यों था? ऐसा इसलिए क्योंकि उत्तर ने दक्षिण को सुसमाचार प्रचार के लिए ज़रूरी जगह के रूप में देखा। उत्तर ने दक्षिण को सुसमाचार प्रचार के लिए एक जगह के रूप में देखा क्योंकि दक्षिण में बहुत से बुतपरस्त लोग थे जो गलत चीज़ों में विश्वास करते थे। और इसलिए, हमें जो करना है वह इन लोगों को सुसमाचार प्रचार करना है।

हमें जो करना है वह यह है कि इन लोगों को वास्तव में ईसाई बनाया जाए, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए, उन्हें सुसमाचार प्रचार की आवश्यकता है। और साथ ही, क्योंकि दास अब स्वतंत्र हैं, इसलिए दासों को भी सुसमाचार प्रचार की आवश्यकता है।

इसलिए, उत्तर ने दक्षिण को धर्म प्रचार के स्थान के रूप में देखा, और दक्षिण ने वास्तव में इस पर आपत्ति जताई। दूसरी ओर, दक्षिण ने वास्तव में उत्तरी प्रकार के संघवादी कारण पर आपत्ति जताई। दक्षिण ने उत्तर को राज्यों के अधिकारों को छीनने, इस तरह के संघवादी कारण को अपनाने और दास रखने की हमारी स्वतंत्रता पर हमारे राज्यों के अधिकारों को छीनने का प्रयास करने के रूप में देखा।

इसलिए, दक्षिण ने न केवल युद्ध जीतने के लिए उत्तर से नफ़रत की, बल्कि दक्षिण ने उत्तर से इसलिए भी नफ़रत की क्योंकि उसने दक्षिण में राज्यों को वह करने का अधिकार नहीं दिया जो दक्षिण को उचित लगा। इसलिए, इसमें कोई संदेह नहीं कि सुलह का समय वाकई बहुत मुश्किल था। इसलिए, उत्तर और दक्षिण की धार्मिक संबद्धता बहुत महत्वपूर्ण है।

अब, इस धार्मिक निष्ठा में, काले चर्च और काले ईसाइयों के साथ क्या होता है, यह बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए, क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है, हम इसे दूसरे व्याख्यान में शामिल करने जा रहे हैं। हम अभी इस पर चर्चा नहीं करने जा रहे हैं, लेकिन हम दूसरे व्याख्यान में देखेंगे कि इस सब के बीच काले ईसाइयों के साथ क्या होता है।

ठीक है, अब, यदि आप युद्ध की व्याख्याओं को देख रहे हैं, तो हमें 1, 2 और 3 पर जाना होगा। हमें गृह युद्ध की व्याख्या कैसे करनी चाहिए? गृह युद्ध की व्याख्या कैसे की जानी चाहिए? ठीक है, सबसे पहले, दक्षिण ने युद्ध की व्याख्या कैसे की? दक्षिण ने युद्ध की व्याख्या उत्तर द्वारा दुर्भावनापूर्ण हस्तक्षेप के रूप में की। दक्षिण ने युद्ध को इसी तरह समझा। उत्तरी लोग दुर्भावनापूर्ण तरीके से हमारे अधिकारों में हस्तक्षेप कर रहे हैं, और ऐसा करने के लिए वे हिंसा का उपयोग कर रहे हैं, और इसलिए हमें अपना बचाव करने का अधिकार है।

इस बीच, हम दक्षिण में जो प्रार्थना कर रहे हैं वह ईश्वरीय प्रतिशोध है। इसलिए, हम ईश्वरीय प्रतिशोध की उम्मीद कर रहे हैं। हम उम्मीद कर रहे हैं कि ईश्वर उन लोगों को पकड़ेगा और उन्हें उनके गलत कामों के लिए दंडित करेगा क्योंकि वे हमारे अधिकारों का उल्लंघन कर रहे हैं।

तो, यह युद्ध की दक्षिणी व्याख्या है। दक्षिणी लोगों ने युद्ध को इसी तरह समझा। युद्ध की उत्तरी व्याख्या, बेशक, अलग थी।

उत्तरी देशों की व्याख्या यह थी कि युद्ध दक्षिण में राजनीतिक विद्रोहियों की साजिश के कारण हुआ था। अगर दक्षिण में राजनीतिक षड्यंत्र करने वाले लोगों ने यह काम शुरू नहीं किया होता तो युद्ध कभी नहीं होता। हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह सभी लोगों की स्वतंत्रता और सम्मान को बनाए रखना है।

तो, उत्तर, उत्तर, जिस बारे में चिंतित था, भगवान ने उत्तर के लिए युद्ध जीत लिया। यह उत्तर के लिए दैवीय प्रतिशोध था। तो, हम जीत गए, और हम इसलिए जीते क्योंकि भगवान हमारे पक्ष में थे।

तो, उत्तरी लोगों की समझ वाकई, वाकई काफी अलग थी। तो, ओह, और इसके साथ ही, दक्षिण को उसके पापों की सज़ा मिल रही है। यही भगवान अपने दैवीय प्रतिशोध के साथ कर रहे हैं।

वह इन लोगों को उनके पापों के लिए दण्डित कर रहा है। यदि वे इतने पापी न होते और परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह न करते, तो उन्हें दण्ड नहीं मिलता, लेकिन अब उन्हें दण्डित किया जा रहा है। परमेश्वर न्याय करने वाला परमेश्वर है, इसलिए उसका न्याय उन पर आता है।

यही उत्तरी व्याख्या है। अब, आइए तीसरे नंबर पर आते हैं, जो सबसे महत्वपूर्ण है। तीसरा नंबर सबसे महत्वपूर्ण है।

ठीक है, नंबर तीन युद्ध की बहुत अधिक परिष्कृत व्याख्या है। आप युद्ध की उस व्याख्या को अब्राहम लिंकन जैसे लोगों के साथ पाते हैं। तो, अब्राहम लिंकन ने निश्चित रूप से इस पूरी चीज़ को संभालने की कोशिश की, लेकिन अब्राहम लिंकन के पास गृहयुद्ध में जो कुछ हुआ उसके बारे में बहुत अधिक परिष्कृत, बहुत अधिक सूक्ष्म समझ थी।

ठीक है। युद्ध की इस अधिक परिष्कृत, अधिक गहन समझ को समझने के लिए, यहाँ तीन कथन दिए जाने की आवश्यकता है। तो, यहाँ अब्राहम लिंकन जैसा कोई व्यक्ति युद्ध की अधिक गहन समझ देने की कोशिश कर रहा है।

तीन कथन जो कहे जाने चाहिए। कथन संख्या एक: प्रत्येक व्यक्ति को इस बात पर थोड़ा कम भरोसा होना चाहिए कि वे परमेश्वर के उद्देश्यों को जानते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को इस बात पर थोड़ा कम भरोसा होना चाहिए कि वे पूरी तरह से निश्चित हैं कि वे परमेश्वर के उद्देश्यों को जानते हैं।

हो सकता है कि ईश्वर के उद्देश्य लोगों की अपेक्षा से कहीं अधिक छिपे हुए हों। हो सकता है कि वे न हों; हो सकता है कि ईश्वर के उद्देश्य उतने खुले न हों, जितना कि हर कोई मानता है। इसलिए, उत्तर और दक्षिण, सभी को ईश्वर के उद्देश्यों के बारे में थोड़ा कम आश्वस्त होना चाहिए।

यह सिद्धांत नंबर एक है। ठीक है। सिद्धांत नंबर दो यह है कि हर किसी को ऐतिहासिक प्रक्रियाओं में अस्पष्टता के बारे में पता होना चाहिए।

इतिहास बहुत ही उलझा हुआ है। ऐतिहासिक प्रक्रियाओं में बहुत अस्पष्टता है। इतिहास उतना भी साफ-सुथरा नहीं है जितना हर कोई उसे बनाने की कोशिश करता है।

तो, यह नंबर दो है। अस्पष्टता को याद रखें। इतिहास की गड़बड़ियों को याद रखें।

याद रखें कि हम किस तरह की दुनिया में रह रहे हैं। यह बहुत ही गंदी दुनिया है। तो, आइए हम सब इसे स्वीकार करें।

ठीक है। नंबर तीन, हर किसी को अपनी, अपनी, अपनी तरफ की नैतिक शुद्धता के बारे में कम आश्वस्त होना चाहिए। हर किसी को अपनी कहानी के नैतिक शुद्धता पर सवाल उठाना चाहिए।

उन्हें चुप नहीं रहना चाहिए, और उन्हें अपनी कहानी की नैतिक शुद्धता के बारे में इतना आश्वस्त नहीं होना चाहिए। ठीक है। तो, तीन सिद्धांत हैं।

परमेश्वर के उद्देश्यों को जानने में कम आत्मविश्वास। यह स्वीकार करना कि इतिहास बहुत ही गड़बड़ है। और साथ ही, इतना भी आश्चर्य न हों कि आप जानते हैं कि आपके पास वह नैतिक शुद्धता है जो आप सोचते हैं कि आपके पास है।

ठीक है। इन तीन बातों को ध्यान में रखते हुए, गृह युद्ध हर किसी के लिए एक सार्थक अनुभव हो सकता है। अगर हर कोई इन तीन सिद्धांतों को गंभीरता से ले, तो इसका परिणाम यह होगा कि गृह युद्ध एक सार्थक अनुभव हो सकता है।

हम गृहयुद्ध को देख सकते हैं, जो पूरे अमेरिकी लोगों के लिए एक सार्थक अनुभव हो सकता था। उत्तर या दक्षिण नहीं, बल्कि पूरे अमेरिकी लोगों के लिए, यहाँ एक सार्थक अनुभव हो सकता है। और हमें अमेरिकी होने के नाते क्या सीखना चाहिए, यही वह है जो अब्राहम लिंकन, निश्चित रूप से, लोगों से करना चाहते थे।

हम लोग क्या हैं? हम इस विनाशकारी स्थिति से क्या सीख सकते हैं? याद रखें, हमें याद रखना चाहिए कि गृह युद्ध कितना भयानक था। एक दिन में दसियों हजार लोगों की हत्या कर दी जाती थी, और इसलिए, यह बहुत भयानक था। क्या इससे कुछ सीखा जा सकता है? और अब्राहम लिंकन ने कहा, हाँ, इससे कुछ सीखा जा सकता है, इसलिए।

अब, कुछ मंत्री चाहते थे कि अमेरिकी लोग अपने पापों का पश्चाताप करें, अपने पापों को पहचानें और अपने भाइयों और बहनों के साथ मेल-मिलाप की कोशिश करें। इसलिए कुछ मंत्री जो अब्राहम लिंकन की तरह लोगों के अधिक परिष्कृत विश्लेषण में विश्वास करते थे, ने कहा, ठीक है, मैं जो संदेश प्रचार करना शुरू करने जा रहा हूँ वह यह है। हमें अपने पापों को पहचानने की जरूरत है, मुझे अपने पापों को पहचानने की जरूरत है।

मैंने अपने भाई या बहन के खिलाफ कहाँ पाप किया है? पाप स्वीकार करना और फिर उसके बाद सुलह की कोशिश करना। अपने उन भाई-बहनों के साथ सुलह की कोशिश करना जो चीजों को मेरे जैसा नहीं देखते थे। इसलिए, बहुत से पादरियों ने पश्चाताप और सुलह का उपदेश देना शुरू कर दिया।

ठीक है, यहाँ एस्क्यू और पेराड का एक उद्धरण है; वे इसके लिए पृष्ठ हैं, लेकिन वे इसे बहुत अच्छी तरह से कहते हैं, इसलिए मैं इस पर हमारी पाठ्यपुस्तक के अनुसार ही चलने जा रहा हूँ। युद्ध अमेरिकी लोगों के सामूहिक अपराध के लिए न्याय का एक दैवीय कार्य था। संघर्ष एक बलिदानपूर्ण और शुद्ध करने वाली त्रासदी थी जिसमें न केवल राष्ट्र को संरक्षित करने की क्षमता थी बल्कि इसे पुनर्जीवित करने की भी क्षमता थी।

तो, मुझे यह पसंद है; यह युद्ध की इस तरह से व्याख्या करने का एक अच्छा सारांश कथन है। तो, यह सामूहिक अपराध, बलिदानपूर्ण सफाई त्रासदी के लिए न्याय का एक दिव्य कार्य है, और न केवल राष्ट्र को संरक्षित करने बल्कि राष्ट्र को पुनर्जीवित करने, इसे फिर से जीवन में लाने की क्षमता है। तो यह एक अच्छा उद्धरण है, एस्क्यू और पेराड, पृष्ठ 114 से 115।

ठीक है, तो यह चर्चों में गृह युद्ध है। मैं इससे बहुत ज़्यादा नहीं निपटता, लेकिन क्या इसके बारे में कोई सवाल है? हम, वह, वह तीसरा रुख, वह उदारवादी रुख, और कुछ सिद्धांतों के साथ जो उस उदारवादी रुख को लाने के लिए इस्तेमाल किए गए थे, वह है, हमने गृह युद्ध से कुछ समझ के साथ बाहर आने की कोशिश की कि यह कैसे, एक राष्ट्र के रूप में हमारी मदद कैसे कर सकता है, यह कैसे हमारी मदद कर सकता है। जब आप दुनिया में गृह संघर्ष के बारे में बात कर रहे हैं तो उन तीन सिद्धांतों को देखना कोई बुरी बात नहीं है। उन तरह के सिद्धांतों को देखना कोई बुरा तरीका नहीं है।

क्या वहाँ कुछ भी है? ठीक है, हम पाठ्यक्रम के पृष्ठ 15 पर जा रहे हैं, पाठ्यक्रम का पृष्ठ 15। मैं, मैं, हम यहाँ अपना समय अच्छी तरह से उपयोग कर रहे हैं क्योंकि वहाँ, ठीक है, हम देखेंगे कि जब हम कैलेंडर के सामान से निपटते हैं, हाँ, अगली बार, अगली बार जब हम शुक्रवार को मिलते हैं। यह व्याख्यान संख्या 11 है, अमेरिका में ब्लैक चर्च।

व्याख्यान 11, अमेरिका में ब्लैक चर्च। ठीक है, ठीक है, सबसे पहले, हम मेथोडिज्म से निपटने जा रहे हैं और देखेंगे कि मेथोडिस्ट के साथ क्या होता है। और ठीक है, मुझे बस, मेरे पास यहाँ कुछ नाम हैं जो मैं आपको देने जा रहा हूँ, और फिर मेरे पास कुछ चर्च हैं जो मैं आपको देने जा रहा हूँ, तो हम यहाँ हैं।

ठीक है, अमेरिका में ब्लैक चर्च। मेथोडिस्टों के बीच, अमेरिका में पहला ब्लैक चर्च फिलाडेल्फिया में बनाया गया था, और चर्च का नाम अफ्रीकी मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च था। तो, यह मेथोडिस्टों के बीच पहला ब्लैक चर्च है।

1814, अफ्रीकी मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च। अब, ध्यान दें कि उन्होंने एपिस्कोपल शीर्षक रखा है क्योंकि वे मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च से बाहर आए थे, लेकिन यह 1814 में फिलाडेल्फिया में गठित अफ्रीकी मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च है। ठीक है, अब जो हुआ था, दुर्भाग्य से, हम कहते हैं, फिलाडेल्फिया में, यह एक उत्तरी शहर है, लेकिन फिलाडेल्फिया में, यह उस प्रश्न पर वापस आता है जो पहले पूछा गया था; फिलाडेल्फिया में, अश्वेतों और गोरों, फिलाडेल्फिया में मेथोडिस्ट अश्वेतों और गोरों के बीच जबरदस्त घर्षण था।

और इसलिए यह एक दुखद कहानी है कि मेथोडिस्टों के बीच इस तरह का टकराव हुआ, आप जानते हैं, इस समय के दौरान, और इसमें से कुछ गुलामी के मुद्दे पर था, कुछ नस्लीय रूप से प्रेरित था, और इसी तरह। तो, ऐसे लोगों का एक समूह है जिन्होंने फैसला किया कि हम अपना खुद का चर्च बनाने जा रहे हैं, अश्वेतों का एक समूह जिसने फैसला किया कि हम अपना खुद का चर्च बनाने जा रहे हैं, और हम इसे अफ्रीकी मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च कहने जा रहे हैं। ठीक है, एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति ने चर्च बनाने, चर्च का नेता बनने और चर्च का पहला बिशप बनने का फैसला किया है।

यहाँ वे बाईं ओर हैं; यह रिचर्ड एलन हैं, जो अमेरिकी ईसाई धर्म के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक हैं। तो अगर मैं, आप जानते हैं, कोई मुझसे 10 या 12 सबसे महत्वपूर्ण लोगों की सूची देने



के लिए कहे, तो वह मेरी सूची में कहीं न कहीं होंगे, रिचर्ड एलन। ठीक है, तो रिचर्ड एलन यहाँ बहुत, बहुत महत्वपूर्ण हैं।

तो, ठीक है, अब रिचर्ड एलन के साथ, वह वास्तव में वह व्यक्ति है जिसने अफ्रीकी मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च की स्थापना की और इसके पहले बिशप बने। लेकिन उन्होंने पहले; उन्होंने पहले मेथोडिस्टों के लिए एक चर्च शुरू किया था, काले मेथोडिस्टों ने बेथेल चर्च कहा। इसलिए, उन्होंने एक संप्रदाय नहीं बनाया था, लेकिन उन्होंने फिलाडेल्फिया में एक चर्च बनाया था जिसे उन्होंने बेथेल चर्च कहा था, और यह काले मेथोडिस्टों के लिए था।

लेकिन यह एक संप्रदाय नहीं था; यह सिर्फ एक अलग था, यह मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च था, लेकिन यह अश्वेत मेथोडिस्टों के लिए था। इसलिए, उन्हें पहले से ही बेथेल चर्च के साथ चर्च की पूजा के लिए अश्वेत मेथोडिस्टों के एक साथ आने का अनुभव था, जो वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण था। तो, ठीक है, अब जब उन्होंने इस चर्च की स्थापना की, जब उन्होंने इस चर्च की शुरुआत की, तो आप किसे, और वह चर्च में एक बिशप बन गए, इस चर्च के पहले बिशप, आपको क्या लगता है कि उन्हें किसने नियुक्त किया? कोई भी लेना चाहता है, और यह नियुक्ति बहुत महत्वपूर्ण थी क्योंकि यह दर्शाता है कि नेतृत्व, आप जानते हैं, अश्वेत मेथोडिस्टों की तरफ है जो खुद को अपने संप्रदाय में बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

तो, उन्हें मंत्रालय के लिए किसने नियुक्त किया? आगे बढ़ने से पहले बस एक अनुमान लगाइए। फ्रांसिस एस्बरी। फ्रांसिस एस्बरी ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने रिचर्ड एलन को नियुक्त किया था।

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है, और एस्बरी इस काले चर्च और काले संप्रदाय के महत्व को दर्शा रहा है; यह इस काले नेता का महत्व है। तो यह बिल्कुल महत्वपूर्ण है। इसलिए, अफ्रीकी मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च का गठन किया गया है।

तो अब, यहाँ बस कुछ संख्याएँ हैं। 1860, 1860, लगभग 22,000 सदस्य। 1860।

ठीक है, तो यह बहुत बुरा नहीं है। इसका गठन 1814 में हुआ था। तो, 1860, 22,000 सदस्य।

ठीक है, 1896, यानी लगभग 1900, इसके लगभग 500,000 सदस्य हैं। तो, 1860, 22,000। 1896, यानी लगभग 1900, इसके लगभग 500,000 सदस्य हैं।

तो, अफ्रीकी मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च वास्तव में विकसित हुआ, वास्तव में विकसित हुआ। वैसे, यह फिलाडेल्फिया में मूल चर्च की तस्वीर है। हाँ।

ओह, अब यह एक संप्रदाय है, इसलिए इसमें बहुत सारे चर्च हैं। हाँ, यह एक संप्रदाय है, यह फैल रहा है, इसमें मिशनरी कार्य है, और इसी तरह की अन्य चीजें हैं। वास्तव में, अफ्रीकी मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च, यह चर्च, यह संप्रदाय, यह चर्च अमेरिका में पहली अश्वेत पत्रिका विकसित करने वाला पहला चर्च था, और इसने अमेरिका में अश्वेतों के लिए पहला विश्वविद्यालय भी विकसित किया।

तो, यह वास्तव में यहाँ एक तरह से आगे बढ़ रहा था। तो, रिचर्ड एलन और अफ्रीकी मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च बहुत, बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस तरह से मेथोडिज़्म की शुरुआत यहाँ हुई।

ठीक है, आपका दिन शुभ हो। ओह, रेचल, ऊपर आओ। क्या तुम्हारा कोई छोटा सा सवाल है? ओह, यह बेथेल चर्च जैसा ही एक चर्च था।

यह एक संप्रदाय बन गया, और इसने अफ्रीकी मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च का नाम ले लिया। मैं बस यह कहना चाह रहा था कि इससे पहले, उनके पास फिलाडेल्फिया में बेथेल चर्च था, जो कोई नया संप्रदाय नहीं था। यह सिर्फ अश्वेत मेथोडिस्टों के लिए उनका स्थानीय चर्च था।

लेकिन अब हमारे पास 1814 के बाद का संप्रदाय है। ठीक है, आपका दिन शुभ हो। हम आपसे शुक्रवार को मिलेंगे।

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके व्याख्यान का विषय है। यह सत्र 13 है, गुलामी और चर्च, गृहयुद्ध।